Downloaded from www.studiestoday.com

विषय एक

ईंटें, मनके तथा अस्थियाँ (हड़प्पा सभ्यता)

स्मरणीय बिन्दु-

1 हड़प्पा सभ्यता का नामकरण- हड़प्पा नामक स्थान जहाँ यह संस्कृति पहली बार खोजी गई थी उसी के नाम पर किया गया है। इसका काल निर्धारण लगभग 2600 और 1900 ईसा पूर्व के बीच किया गया है।

2. सिंधु घाटी सभ्यता की सबसे, विशिष्ट पुरावस्तु - मुहर - यह सेलखड़ी नामक पत्थर से बनाई जाती थी।

3. हड़प्पा सभ्यता की जानकारी के प्रमुख स्रोत- मृदभाण्ड, भौतिक अवशेष, आभूषण, औजार, मोहरें, इमारतें, खुदाई में मिले सिक्के इत्यादि।

4. हड़प्पाई संस्कृति के प्रमुख क्षेत्र- अफगानिस्तान, जम्मू, ब्लूचिस्तान (पाकिस्तान), गुजरात, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश।

5. हड़प्पा स्थलों से मिले अनाज के दानों में - गेहूं, जौ, दाल, सफेद चना तथा तिल शामिल हैं।

6. हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख जानवर - भेंड़, बकरी, भैंस तथा सूअर। वृषभ (बैल) का प्रयोग - कृषि कार्य में खेत जोतने के लिए किया जाता था।

7. हड़प्पा सभ्यता की बस्तियाँ दो भागों में विभाजित थीं - दुर्ग और निचला शहर

8. हड़प्पा सभ्यता में सड़कों तथा गलियों को लगभग एक ग्रिड, पद्धति पर बनाया गया था और ये एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं। जल निकास प्रणाली अनूठी थी घरो के गन्दे पानी की नालियों को गली की नालियों से जोड़ा गया था। नालियां पक्की ईटो से बनाई गयी थी।

9. निचला शहर आवासीय भवनो के उदाहरण प्रस्तुत करता है तथा दुर्ग पर बनी संरचनाओं का प्रयोग संभवतः विशिष्ट सार्वजनिक प्रयोजनों के लिए किया जाता था।

10. नहरें, कुएं, जलाशय - सिंचाई के प्रमुख स्रोत थे।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

11. विशाल स्नानागर – एक आयताकार जलाशय है। जो चारों ओर से एक गलियारे से घिरा हुआ है। जलाशय के तल तक जाने के लिए सीढ़ियां बनी थीं।

12. हड़प्पा सभ्यता के शवाधानों में आमतौर पर मृतकों को गर्तों में दफनाया गया था। उनके साथ मृदभाण्ड और अवशेष मिले हैं।

13. आभूषणों व मनकों को तौलने के लिए – बाँट का प्रयोग होता था। यह चर्ट नामक पत्थर से बनाये जाते थे।

14. मनकों के निर्माण में प्रयुक्त पदार्थों – कार्नीलियन (सुन्दर लाल रंग का) जैस्पर, स्फटिक, क्वार्ट्ज तथा सेलखड़ी जैसे पत्थर – तांबा, काँसा तथा सोने जैसी, धातुएँ तथा शंख फयॉन्स और पकी मिट्टी, सभी का प्रयोग मनके बनाने में होता था। इनके आकार जैसे– चक्राकार, बेलनाकार, गोलाकार तथा खंडित होते थे।

15. मुहरों और मुद्रांकनों का प्रयोग– लंबी दूरी के संपर्कों को सुविधाजनक बनाने के लिए होता था।

17. हड़प्पा की लिपि वर्णमालीय थी। इसमें चिन्हों की संख्या लगभग 375 से 400 के बीच थी तथा संभवत: दाई से बाई और लिखी जाती थी।

16. हड़प्पा सभ्यता का विनाश – जलवायु परिवर्तन वनों की कटाई, बाढ़, नदियों का सूख जाना मार्ग बदलने के कारण हुआ।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न (2 अंकों वाले)

1. उपमहाद्वीप में हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख चार पुरास्थल क्षेत्र कौन-कौन से थे?

2. हड़प्पा सभ्यता की सर्वाधिक विशिष्ट पुरावस्तु कौन सी है? तथा यह किस पत्थर से बनाई गई है?

3. हड़प्पा सभ्यता में सबसे लम्बे अभिलेख में कितने चिन्ह अंकित हैं? यह किस प्रकार लिखे जाते थे?

4. हड़प्पा काल में मुहरों और मुद्रांकनों के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

5. हड़प्पा की लिपि की कोई दो विशेषताएँ लिखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न (5 अंकों वाले)

1. मोहनजोदड़ो की गृह स्थापत्य कला का वर्णन कीजिए।

2. जनरल कनिंघम कौन थे? वह किस प्रकार हड़प्पा के महत्व को समझने में चूक गए?

3. हड़प्पा निवासियों द्वारा क्षेत्र में बनाये बए विशाल स्नानागार की मुख्य विशेषताओं का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

4. हड़प्पा की सभ्यता की अन्त के संभावित कारणों की समीक्षा कीजिए।

5. हड़प्पा सभ्यता थी 'जल विकास प्रणाली' किस प्रकार इस सभ्यता की अनूठी विशिष्टता थी स्पष्ट कीजिए?

6. पुरातत्वविदों द्वारा अपनी खोजों को किस प्रकार वर्गीकृत किया जाता था? उल्लेख कीजिए।

7. हड़प्पावासी शिल्प 'उत्पादन के लिए कच्चा माल प्राप्त करने के लिए कौन से तरीके अपनाते थे? वर्णन कीजिए।

8. हड़प्पाई समाज में सामाजिक आर्थिक भिन्नताओं का अवलोकन करने के लिए पुरातत्वविद् किन विधियों का प्रयोग करते थे?

अनुच्छेदों पर आधारित प्रश्न

निम्नलिखित अनुच्छेदों को पढ़िए और अंत में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. पुरावस्तुओं की पहचान कैसे की जाती है

भोजन तैयार करने की प्रक्रिया में अनाज पीसने के यंत्र तथा उन्हें आपस में मिलाते, मिश्रण करने तथा पकाने के लिए बरतनों की आवश्यकता थी। इन सभी को पत्थर, धातु तथा मिट्टी से बना जाता था। यहां एक महत्वपूर्ण हड़प्पा स्थल मोहनजोदड़ों में हुए उत्खननों पर सबसे आरंभिक रिपोर्ट में से कुछ एक उदाहरण दिए जा रहे हैं :

अवतल चक्कियां... बड़ी संख्या में मिली हैं... और ऐसा प्रतीत होता है कि अनाज पीसने के लिए प्रयुक्त ये एकमात्र साधन थीं। साधारणतः ये चक्कियाँ स्थूलतः कठोर, कंकरीले, अग्निज अथवा बलुआ पत्थर से निर्मित थीं और आमतौर पर इनसे अत्यधिक प्रयोग के संकेत मिलते हैं। चूंकि इन चक्कियों के तल सामान्यतया उत्तल हैं, निश्चित रूप से इन्हें जमीन में अथवा मिट्टी में जमा कर रखा जाता होगा जिससे इन्हें हिलने से रोका जा सके। दो मुख्य प्रकार की चक्कियाँ मिली हैं। एक वे हैं जिन पर एक दूसरा छोटा पत्थर आगे-पीछे चलाया जाता था, जिससे निचला पत्थर खोखला हो गया था तथा दूसरी वे हैं जिनका प्रयोग संभवतः केवल सालन या तरी बनाने के लिए जड़ी-बूटियों तथा मसालों को कूटने के लिए किया जाता था। इन दूसरे प्रकार के पत्थरों को हमारे श्रमिकों द्वारा 'सालन पत्थर' का नाम दिया गया है तथा हमारे बावर्ची ने एक वही पत्थर रसोई में प्रयोग के लिए संग्रहालय में उधार मांगा है। अर्नेस्ट मेके, फर्दर एक्सकैवेशन्स एट मोहनजोदड़ों, 1937 से उद्धृत

1. 'सालन पत्थर' का प्रयोग किया प्रकार किया जाता था? यह नाम किसके द्वारा दिया गया। 2

2. अवतल चक्कियों की दो विशेषताएँ लिखिए। 2

3. चक्कियाँ कौन-कौन से पत्थरों से निर्मित की जाती थीं? 2

4. हड़प्पाई बरतनों के महत्व को स्पष्ट कीजिए। 2

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

2. अब तक खोजी गई प्राचीनतम प्रणाली

नालियों के विषय में मैके लिखते हैं: ''निश्चित रूप से यह एब तक खोजी गई सर्वथा संपूर्ण प्राचीन प्रणाली है।'' हर आवास गली की नालियों से जोड़ा गया था। मुख्य नाले गारे में जमाई गई ईंटों से बने थे और इन्हें ऐसी ईंटों से ढका गया था जिन्हें सफाई के लिए हटाया जा सके। कुछ स्थानों पर ढकने के लिए चूना पत्थर की पट्टिका का प्रयोग किया गया था। घरों की नालियां पहले एक हौदी या मलकुंड में खाली होती थीं। जिसमें ठोस पदार्थ जमा हो जाता था और गंदा पानी गली की नालियों में बह जाता था। बहुत लंबे नालों में कुछ अंतरालों पर सफाई के लिए हौदियां बनाई गई थी। यह पुरातत्व का एक अजूबा ही है कि ''मलबे, मुख्यत: रेत के छोटे-छोट ढेर सामान्यत: निकासी के नालों के अगल-बगल पड़े मिल हैं जो दर्शाते हैं.... कि नालों की सफाई के बाद कचरे को हमेशा हटाया नहीं जाता था।''

अर्नेस्ट मैके, अर्ली इंडस सिविलाईजेशन, 1948

जल निकास प्रणालियाँ केवल बड़े शहरों तक ही सीमित नहीं थीं बल्कि ये कई छोटी बस्तियों में मिली थीं। उदाहरण के लिए लोथल में आवासों के निर्माण के लिए जहां के लिए जहां कच्ची ईंओं का प्रयोग हुआ था, वहीं नालियाँ पक्की ईंटों से बनाई गई थी।

1. ''हड़प्पा शहर की जल निकासी प्रणाली इस सभ्यता की एक अनूठी विशेषता थी'' इस कथन को स्पष्ट कीजिए। 2

2. मोहनजोदड़ों की गृह स्थापत्य की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 2

3. नालियों के विषय में मैके के मुख्य विचारों का वर्णन कीजिए। 2

4. नालों के अगल-बगल पड़े, रेत के ढेर में क्या दर्शाते है? 2

एक 'आक्रमण' के साक्ष्य

डैडमैन लेन एक संकरी गली है, जिसकी चौड़ाई 3 से 6 फीट तक परिवर्ती है... वह बिन्दु जहाँ यह गली पश्चिम की ओर मुड़ती है, 4 फीट तथा 2 इंच की गहराई पर एक खोपड़ी का भाग तथा एक वयस्क छाती तथा हाथ के ऊपरी भागी हड्डियां मिली थीं। ये सभी बहुत भुरभुरी अवस्था में थीं। यह धड़ पीठ के बल, गली में आड़ा पड़ा हुआ था। पश्चिम की ओर 15 इंच की दूरी पर एक छोटी खोपड़ी के कुछ टुकड़े थे। इस गली का नाम इन्हीं अवशेषों पर आधारित है।

जॉन मार्शल, मोहनजोदड़ों एंड द इंडस सिविलाईजेशन 1931 से उद्धृत।

1925 में मोहनजोदड़ों के इसी भाग से सोलह लोगों के अस्थि-पंजर उन आभूषणों सहित मिले थे जो इन्होंने मृत्यु के समय पहने हुए थे।

बहुत समय पश्चात 1947 में आर.ई.एम. व्हीलर ने जो भारीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के तत्कालीन डायरेक्टर जनरल थे उन पुरातात्विक साक्ष्यों का उपमहाद्वीप में ज्ञात प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद के साक्ष्यों

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

से संबंध स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने लिखा:

ऋग्वेद में पुर शब्द का उल्लेख है जिसका अर्थ है प्राचीर, किला या गढ़। आर्यों के युद्ध के देवता इंद्र को पुरंदर अर्थात् गढ़-विध्वंसक कहा गया है।

ये दुर्ग कहां हैं... या थे....? पहले यह माना गया था कि ये मिथक मात्र थे... हड़प्पा में हाल में हुए उत्खननों ने मानो परिदृश्य बदल दिया है। यहां हम मुख्यत: अनार्य प्रकार की एक बहुत विकसित सभ्यता पाते हैं जिसमें अब प्राप्त जानकारी के अनुसार विशाल किलेबंदियां की गई थीं.... यह सुदृढ़ रूप में स्थिर सभ्यता कैसे नष्ट हुई? हो सकता है जलवायु संबंधी, आर्थिक अथवा राजनीतिक ह्रास ने इसे कमजोर किया हो, पर अधिक संभावना इस बात की है कि जानबूझ कर तथा बड़े पैमाने पर किए गए विनाश ने इसे अंतिम रूप से समाप्त कर दिया। यह मात्र संयोग ही नहीं हो सकता कि मोहनजोदड़ो के अंतिम चरण में आभास होता है कि यहाँ पुरुषों, महिलाओं तथा बच्चों का जनसंहार किया गया था। पारिस्थितिक साक्ष्यों के आधार पर इंद्र अभियुक्त माना जाता है।

आर.ई.एम. व्हीलर, हड़प्पा 1946 एंशिएंट इंडिया (जर्नल) 1947 से उद्धृत।

1960 के दशक में जॉर्ज डेल्स नामक पुरातत्वविद ने मोहनजोदड़ो में जनसंहार के साक्ष्यों पर सवाल उठाए। उन्होंने दिखाया कि उस स्थान पर मिले सभी अस्थि-पंजर एक ही काल से संबद्ध नहीं थे:

हालाँकि इनमें से दो से निश्चित रूप में संहार के संकेत मिलते हैं, ... पर अधिकांश अस्थियाँ जिन संदर्भों में मिली है वे इंगित करती है कि ये अत्यंत लापरवाही तथा श्रद्धाहीन तरीके से बनाए गए शवाधान थे। शहर में मिली हैं वे इंगित करती हैं कि ये अत्यंत लापरवाही तथा श्रद्धाहीन तरीके से बनाए गए शवाधान थे। शहर के अंतिम काल से संबद्ध विनाश का कोई स्तर नहीं है, व्यापक स्तर पर अग्निकांड के चिन्ह नहीं है, चारों ओर फैले हथियारों के बीच कवचधारी सैनिकों के शव नहीं है। दुर्ग से जो शहर का एकमात्र किलेबंद भाग था, अंतिम आत्मरक्षण के कोई साक्ष्य नहीं मिले हैं।

जी.एफ. डेल्स, 'द मिथिकल मैसेकर एट मोहनजोदड़ो', एक्पेपीडीशन, 1964 से उद्धृत।

जैसा कि आप देख सकते हैं कि तथ्यों का सावधानीपूर्वक पुरर्निरीक्षण कभी-कभी पूर्ववर्ती व्याख्याओं को पूरी तरह से उलट देता है।

1. उपमहाद्वीप में ज्ञात प्रचीनतम ग्रंथ का क्या नाम था? उसमें 'पुर शब्द' का अर्थ स्पष्ट कीजिए। 2

2. 'मृतकों की गली' इस गली को क्यों कहा गया? 2

3. नवीन साक्ष्य के आधार पर कभी-कभी प्रारंभिक व्याख्या क्यों पलट दी जाती है? 4

मानचित्र कार्य- भारत के राजनीतिक रेखा-मानचित्र पर निम्नलिखित को अंकित व नामांकित कीजिए। 5

राखीगढ़ी, चन्हुदड़ो, मोहनजोदड़ो, रंगपुर, बालाकोट

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

विषय दो

राजा, किसान और नगर
आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएं
(लगभग 600 ई. पू. से 600 ई0)

स्मरणीय बिन्दु-

1 भारतीय अभिलेख विज्ञान में उल्लेखनीय प्रगति 1830 के दशक में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकारी जेम्स प्रिंसेप द्वारा ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपि का अर्थ निकाल गया।

2. अभिलेखों व बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार, असोक सर्वाधिक प्रसिद्ध शासकों में से एक था।

3. छठी शताब्दी ई. पूर्व एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी काल, राज्यों नगरों का विकास लोहे का बढ़ता प्रयोग सिक्कों का विकास आदि।

4. जैन तथा बौद्ध सहित विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं का काल।

5. महाजनपद नाम से सोलह राज्यों का उल्लेख- वज्जि, मगध, कौशल, कुरू, पांचाल, गांधार और अवंति जैसे प्रमुख महाजनपद थे।

6. शासन व्यवस्था- महाजनपदों पर राजाओं, गण-संघो अथवा कई लोगों समूह का शासन था।

7. सर्वाधिक शक्तिशाली महाजनपद मगध- उपजाऊ भूमि लोहे की खदानें, नदियों द्वारा यातायात आवागमन, योग्य शासक।

8. मौर्य साम्राज्य की जानकारी के मुख्य स्रोत- मेगस्थनीज के विवरण, कौटिल्य द्वारा रचित **अर्थशास्त्र**, जैन, बौद्ध, पौराणिक ग्रंथ, अभिलेख, सिक्के आदि। (असोक के अभिलेख व स्तंभ प्रमुख)

9. मौर्य साम्राज्य का प्रशासन- पांच प्रमुख राजनीतिक केन्द्र राजधानी पाटलिपुत्र और चार प्रांत- तक्षशिला, उज्जयिनी, तोसलि और सुवर्णगिरी।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

10. दक्षिण के राजा और सरदार- चोल, चेर और पाण्डय। इनके इतिहास के विषय में जानकारी के प्रमुख स्त्रोत-प्राचीन संगम ग्रंथ
11. उच्च स्थित प्राप्त करने के लिए राजाओं द्वारा देवी-देवताओं के साथ जुड़ना। (कुषाण शासकों ने मूर्तियों के जरिए स्वयं को देवतुल्य प्रस्तुत किया।
12. भारत में सामंतवाद संभवतः गुप्तकाल से।
13. गुप्त शासकों के इतिहास निर्माण के स्रोत- साहित्य, सिक्के, अभिलेख।
14. साधारण जनता द्वारा राजाओं के बारे में दिए विचारों का वर्णन जातक तथा पंचतंत्र जैसे ग्रंथों में। इनकी भाषा पाली।
15. तमिल संगम साहित्य में ग्रामीण समाज में विभिन्नताओं का उल्लेख। वर्गो की यह विभन्नता भूमि के स्वामित्व, भ्रम और नयी प्रौद्योगिकी के उपयोग पर आधारित।
16. छठी शताब्दी में व्यापार का माध्यम सिक्के। सोने के सिक्के सर्वप्रथम प्रथम शताब्दी ई॰ में कुषाण शासको द्वारा जारी।
17. ईसवी के आरंभिक शताब्दियों के अभिलेखों में भूमिदान का उल्लेख। भूमिदान साधारण तौर पर धार्मिक संस्थाओं और ब्राहमणों को दिये गए थे।
18. महिलाओं का सम्पत्ति पर स्वंतत्र अधिकार नही था किन्तु प्रभावती गुप्त भूमि की स्वामी थी और उन्हे भूमिदान भी किया। संभवतः क्योंकि वे एक रानी थी।
19. भूमिदान का प्रभाव-दुर्बल होता राजनीतिक प्रभुत्व।
20. अभिलेखिक साक्ष्यों की सीमाएं - हल्के ढंग से उत्कीर्ण किये गए शब्दों का पढ़ पाना मुश्किल, समय के साथ इनका हल्का पड़ जाना तथा नष्ट हो जाना, वास्तविक अर्थ न निकाल पाना, लिखने वाले की प्राथमिकताएँ।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न (2 अंक वाले)

1. श्रेणी शब्द से क्या अभिप्राय है?
2. छठी सदी ई.पू. कृषि की उपज बढ़ाने के लिए किन तरीकों को अपनाया गया? किन्हीं दो का उल्लेख कीजिए।
3. प्रभावती गुप्त द्वारा किया गया भूमिदान विशेष क्यों है? स्पष्ट कीजिए।
4. 'महाजनपद' शब्द से आप क्या समझते हैं?
5. दक्षिण भारत में रोमन सिक्कों के मिलने का क्या अभिप्राय है?
6. सोने के सिक्के सबसे पहले कब और किसके द्वारा जारी किये गए?
7. असोक के अभिलेखों में मुख्य रूप से किस लिपि का प्रयोग किया गया है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

8. 'जातक' और पंचतंत्र की कथाएँ किस प्रकार इतिहास निर्माण के एक स्रोत के रूप में भूमिका निभाती हैं? दो बिन्दु दीजिए।

9. हिन्द-यूनानी शासको द्वारा जारी किये गए सिक्कों से पश्चिमोत्तर के अभिलेखों को पढ़ने किस प्रकार सहायता मिली? बताइए।

लघु उत्तरीय प्रश्न (5 अंक वाले)

1. जेम्स प्रिसेंप कौन थे? भारतीय इतिहास लेखन में उनकी क्या देन है?

2. महाजनपदों की प्रशासन व्यवस्था की व्याख्या कीजिए।

3. मौर्यवंश के इतिहास की रचना के लिए इतिहासकारों ने किन स्रोतों का उपयोग किया? स्पष्ट कीजिए।

4. छठी से चौथी शताब्दी ई॰ पू॰ में मगधा के सर्वाधिक शक्तिशाली महाजनपद बनने के क्या कारण थे?

5. छठी शताब्दी ई॰ में सोने के सिक्के मिलने कम हो गए। इसके संभावित कारण बताइये?

6. अभिलेखों से प्राप्त होने वाली जानकारी की सीमाओं का उल्लेख कीजिए।

अनुच्छेदों पर आधारित प्रश्न (8 अंक वाले)

1. समुद्रगुप्त की प्रशस्ति

यह प्रयाग प्रशस्ति का एक अंग है:

धरती पर उनका कोई प्रतिद्वंदी नहीं था। अनेक गुणों और शुभकार्यों से संपन्न उन्होंने अपने पैर के तलवे से अन्य राजाओं के यश को मिटा दिया है। वे परमात्मा पुरुष है, साधु (भले) की समृद्धि और असाधु (बुरे) के विनाश के कारण है। वे अज्ञेय हैं। उनके कोमल हृदय को भक्ति और विनय से ही वश में किया जा सकता है। वे करुणा से भरे हुए हैं। वे अनेक सहस्त्र गायों के दाता हैं। उनके मस्तिष्क की दीक्षा दीन-दुखियों, विरहणियों और पीड़ितों के उद्धार के लिए की गई है। वे मानवता के लिए दिव्यमान उदारता की प्रतिमूर्ति है। वे देवताओं में कुबेर (धन-देव) वरुण (समुद्र-देव), इंद्र (वर्षा के देवता) और यम (मृत्यु-देव) के तुल्य हैं।

1. 'प्रयाग प्रशस्ति' के लेखक का नाम बताइए। 2

2. समुद्रगुप्त के विभिन्न गुणों की व्याख्या कीजिए। 3

3. प्रस्तुत प्रशस्ति में शासक को किन देवों के तुल्य बताया गया? 2

4. सुदर्शन झील के विषय में जानकारी कहाँ से प्राप्त होती है? 1

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

गुजरात की सुदर्शन झील

सुदर्शन झील एक कृत्रिम जलाशय था। हमें इसका ज्ञान लगभग दूसरी शताब्दी ई. के संस्कृत के एक पाषण अभिलेख से होता है। इस अभिलेख को शक शासक रुद्रमन की उपलब्धियों का उल्लेख करने के लिए बनवाया गया था।

इस अभिलेख में कहा गया है कि जलद्वारों और तटबंधो वाली इस झील का निर्माण मौर्य काल में एक स्थानीय राज्यपाल द्वारा किया गया था। लेकिन एक भीषण तूफान के कारण इसके तटबंध टूट गए और सारा पानी बह गया। बताया जाता है कि तत्कालीन शासक रुद्रमन ने इस झील की मरम्मत अपने खर्चे से करवाई थी, और इसके लिए अपनी प्रजा से कर भी नहीं लिया था। इसी पाषाण-खंड पर एक और अभिलेख (लगभग पांचवीं सदी) है जिसमें कहा गया है कि गुप्त वंश के एक शासक ने एक बार फिर इस झील की मरम्मत करवाई थी।

1. सुदर्शन झील किस प्रकार का जलाशय है? इसका निर्माण किसके द्वारा करवाया गया? 3
2. इस काल में सिंचाई के मुख्य साधन क्या थे? 2
3. सुदर्शन झील की मरम्मत का कार्य किस प्रकार किया गया? 2
4. सुदर्शन झील के विषय में जानकारी कहाँ से प्राप्त होती है? 1

www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

विषय तीन

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

(लगभग 600 ई.पू. से 60.0 ईसवी)

स्मरणीय बिन्दु-

1 समकालीन समाज को समझने के लिए इतिहासकार प्रायः साहित्यिक परम्पराओं का उपयोग करते हैं। इसी संदर्भ में 1919 में महाभारत का समालोचनात्मक संस्करण तैयार करने की परियोजना शुरू की गई।

2. महाभारत की मुख्य कथावस्तु पितृवंशिकता के आदर्श को सुदृढ़ करती है। इस व्यवस्था में पुत्र पिता की मृत्यु के बाद उसके संसाधनों पर अधिकार जमा सकते थे।

3. पैतृक संसाधनों पर पुत्रियों का कोई अधिकार नहीं था। गोत्र से बाहर इनका विवाह करना अपेक्षित था। इसे बहिर्विवाह पद्धति कहते हैं।

4. नए नगरों के उद्‌भव से सामाजिक जीवन अधिक जटिल हुआ। इस चुनौती का जवाब, ब्राह्मणों ने समाज के लिए विस्तृत आचार संहिताएँ तैयार करके दिया जैसे- धर्मसूत्र, धर्मशास्त्र (मनुस्मृति) आदि।

5. ब्राह्मणीय पद्धति में लोगों को गोत्रों में वर्गीकृत किया गया है। प्रत्येक गोत्र एक वैदिक ऋषि के नाम पर होता था।

6. गोत्रों के दो महत्वपूर्ण नियम :- विवाह के पश्चात स्त्रियों को पिता के स्थान पर पति के गोत्र का माना जाता था तथा एक ही गोत्र के सदस्य आपस में विवाह सम्बन्ध नहीं रख सकते थे।

7. धर्मसूत्रों व धर्मशास्त्रों में चारों वर्गों के लिए आदर्श जीविका से जुड़े कई नियम मिलते हैं।

8. 'जाति' शब्द इस काल की सामाजिक जटिलताएँ दर्शाता है। ब्राह्मणीय सिद्धांत में वर्ण की तरह जाति भी जन्म पर आधारित थी। किन्तु इनकी कोई निश्चित संख्या नहीं थी।

9. वे जातियाँ जो एक ही जीविका अथवा व्यवस्था से जुड़ी थी उन्हें कभी-कभी श्रेणियों में भी संगठित किया जाता था।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

10. उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली कुछ विविधताओं की वजह से कुछ ऐसे समुदाय (निषाद्, मलेच्छ) रहे हैं जिन पर ब्राह्मणीय विचारों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

11. ब्राह्मणों ने समाज के कुछ वर्गों को 'अस्पृश्य' घोषित कर (जैसे चाण्डाल) सामाजिक वैषम्य को और अधिक प्रखर बनाया।

12. मनुस्मृति में चाण्डालों के कर्तव्यों की सूची मिलती है।

13. स्त्रियाँ पैतृक संसाधन में हिस्सेदारी की मांग नहीं कर सकती थीं। परन्तु स्त्रीधन पर उनका स्वामित्व माना जाता था।

14. इतिहासकार किसी ग्रंथ का विश्लेषण करते समय अनेक पहलुओं पर विचार करते हैं जैसे ग्रंथ की भाषा, प्रकार, ग्रंथों के श्रोताओं आदि का।

15. संभवत: महाभारत की मूलकथा के रचियता भाट सारथी थे। ये युद्ध क्षेत्र में जाते थे और विजय की उपलब्धियों के बारे कविताएँ लिखते थे। किन्तु साहित्यिक परम्परा में इसके रचियता ऋषि व्यास माने जाते है।

16. द्रौपदी से पांडवो का विवाह महाभारत की सबसे चुनौतीपूर्ण कथा है। यह बहुपति प्रथा का उदाहरण है, जिसका लेखकों ने विभिन्न तरीकों से स्पष्टीकरण देने का प्रयास किया है।

अति लघ प्रश्न (2 अंक)

1. 'महाभारत' उपमहाद्वीप के सबसे समृद्ध ग्रंथों में क्यों एक माना जाता है? दो बिंदु दीजिए।

2. विवाह सम्बंधी 'बहिर्विवाह' पद्धति का क्या अर्थ है? इसने महिलाओं के जीवन को किस प्रकार नियंत्रित किया?

3. पितृवंशिकता तथा मातृवंशिकता शब्दों का अंतर स्पष्ट कीजिए।

4. महाभारत की मूलकथा के रचियता कौन थे? स्त्रीधन से आप क्या समझते है?

5. यायावर पशुपालकों के समुदाय को शंका दृष्टि से क्यों देखा जाता था? दो बिन्दु दीजिए।

6. 'धर्मशास्त्रों' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

7. 'मनुस्मृति' के अनुसार पैतृक जायदाद का बंटवारा किस प्रकार किया जाता था? इस सब में स्त्रियों का क्या स्थान था?

8. ब्राह्मणीय पद्धति के अनुसार गोत्र सम्बंधी दो नियम लिखिए।

लघु प्रश्न (5 अंक)

1. आरंभिक समाज में नए नगरों के उदय ने सामाजिक जीवन को किस तरह जटिल बना दिया? इस चुनौती को ब्राह्मणों ने किस प्रकार संभाला? स्पष्ट कीजिए।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

2. ''किस प्रकार महाभारत का समालोचनात्मक संस्करण एक अत्यंत महत्वाकांक्षी परियोजना मानी गई''? इस कथन का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

3. यह हम कैसे कह सकते हैं कि सातवाहनों के लिए पितृवंशिकता इतनी महत्वपूर्ण नहीं थी?

4. ''उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली विविधताओं की वजह से यह मुमकिन नहीं हैं कि ब्राह्मणीय विचारों ने सब पर प्रभाव डाला हो'' इस कथन के पक्ष में उत्तर दीजिए।

6. इस काल में स्त्री और पुरुषों के बीच सामाजिक समानता की भिन्नता संसाधनों पर उनके नियंत्रण की भिन्नता की वजह से किस प्रकार प्रखर हुई? स्पष्ट कीजिए।

7. किन मुद्दों से प्रभावित होने के बाद इतिहासकार किसी ग्रंथ की विषय-वस्तु से इतिहास का निर्माण करता है? स्पष्ट कीजिए।

8. महाभारत की मुख्यत: कथावस्तु ने पितृवंशिकता के आदर्श को किस प्रकार और अधिक सुदृढ़ किया? वर्णन कीजिए।

9. 'धर्मसूत्रों' और 'धर्मशास्त्रों' में वर्णित चार वर्गो के आदर्श जीविका से जुड़े नियम क्या थे? इन नियमों का पालन करने के लिए ब्राहम्णों द्वारा अपनाई गई नीतियों का वर्णन करो।

10. मनुस्मृति में वर्णित चाण्डालों के कर्तव्यों का वर्णन करते हुए यह स्पष्ट कीजिए कि चाण्डालों ने शास्त्रों में निर्धारित अपने हीन जीवन को स्वीकार कर लिया होगा या इसमें संदेह की संभावना है। अपने उत्तर के पक्ष और विपक्ष में तर्क लिखिए।

11. महाभारत में द्रौपदी से पांडवों के विवाह का उदाहरण उस समय प्रचलित बहुपति प्रथा पर क्या प्रकाश डालता है? स्पष्ट कीजिए।

12. मंदसौर अभिलेख किस प्रकार जटिल सामाजिक प्रक्रियाओं की झलक देता है? स्पष्ट कीजिए।

1. एक धनाढ्य शूद्र

यह कहानी पालि भाषा के बौद्ध ग्रंथ मज्झिमनिकाय से है जो एक राजा अवन्तिपुत्र और बुद्ध के अनुयायी कच्चन के बीच हुए संवाद का हिस्सा है। यद्यपि यह कहानी अक्षरश: सत्य नहीं थी तथापि यह बौद्धों के वर्ण संबंधी रवैये को दर्शाती है।

अवन्तिपुत्र ने कच्चन से पूछा कि ब्राह्मणों के इस मत के बारे में उनकी क्या राय है, कि वे सर्वश्रेष्ठ हैं और अन्य जातियाँ निम्न कोटि की हैं, ब्राह्मण का वर्ण शुभ्र है और अन्य जातियाँ काली है, केवल ब्राह्मण पवित्र है अन्य नहीं। ब्राह्मण ब्रह्मा के पुत्र हैं, ब्रह्मा के मुख से जन्मे, उनसे ही रचित हैं तथा ब्रह्मा के वंशज हैं।

कच्चन ने उत्तर दिया ''क्या यदि शूद्र धनी होता- दूसरा शूद्र- अथवा क्षत्रिय या फिर ब्राह्मण अथवा वैश्य। उससे विनीत स्वर में बात करता?''

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

अविन्तपुत्र ने प्रत्युत्तर में कहा कि यदि शूद्र के पास धन अथवा अनाज स्वर्ण या फिर रजत होती वह दूसरे शूद्र को अपने आज्ञाकारी सेवक के रूप में प्राप्त कर सकता था, जो उससे पहले उठे और उसके बाद विश्राम करे, जो उसकी आज्ञा का पालन करे विनीत वचन बोले अथवा वह क्षत्रिय, ब्राह्मण या फिर वैश्य को भी आज्ञावाही सेवक बना सकता था।

कच्चन ने पूछा ''यदि ऐसा है तो क्या फिर चारों वर्ण एकदम समान नहीं हैं?''

अविन्तपुत्र ने यह स्वीकार किया कि इस आधार पर चारों वर्णों में कोई भेद नहीं है।

1. उपरोक्त उद्धरण कहाँ से उद्धृत है? 1

2. उद्धरण में अविन्त, पुत्र द्वारा पूछा गया प्रश्न, ब्राह्मणों की श्रेष्ठता को किस प्रकार दर्शाता है? 3

3. यह उद्धरण तत्कालीन जाति व्यवस्था के किन पहलुओं पर प्रकाश डालता है? 3

4. उपरोक्त संवाद किस-किस के बीच में हुआ? 1

2. बाघ सदृश पति

यह सारांश महाभारत के आदिपर्वन से उद्धत कहानी का है :

पांडव गहन वन में चले गये थे। थक कर वे सो गये। केवल द्वितीय पांडव भीम जो अपने बल के लिए प्रसिद्ध थे, रखवाली करते रहे। एक नरभक्षी राक्षस को पांडवों की मानुष गंध ने विचलित किया और उसने अपनी बहिन हिडिम्बा को उन्हें पकड़कर लाने के लिए भेजा। हिडिम्बा भीम को देखकर मोहित हो गई और एक सुन्दर स्त्री के वेश में उसने भीम से विवाह का प्रस्ताव किया जिसे उन्होंने अस्वीकार दिया। इस बीच राक्षस वहां आ गया और उसने भीम को मल्ल युद्ध के लिए ललकारा। भीम ने उसकी चुनौती को स्वीकार किया और उसका वध कर दिया। शोर सुनकर पांडव जाग गए। हिडिम्बा ने उन्हें अपना परिचय दिया और भीम के प्रति अपने प्रेम से उन्हें अवगत कराया। वह कुंती से बोली- ''हे उत्तम देवी, मैंने मित्र, बांधव ओर अपने धर्म का भी परित्याग कर दिया है और आपके बाघ सदृश पुत्र को अपने पति के रूप में चयन किया है.... चाहे आप मुझे मूर्ख समझें अथवा अपनी समर्पित दासी, कृपया मुझे अपने साथ लें तथा आपका पुत्र मेरा पति हो।''

अंततः युधिष्ठिर इस शर्त पर इस विवाह के लिए तैयार हो गए कि भीम दिनभर हिडिम्बा के साथ रहकर रात्रि में उनके पास आ जाएँगे। यह दंपति दिन भर सभी लोगों की सैर करते। समय आने पर हिडिम्बा ने एक राक्षस पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम घटोत्कच रखा। तत्पख्यात माँ और पुत्र पांडवों को छोड़कर वन में चले गए किन्तु घटोत्कच ने यह प्रण किया कि जब भी पांडवों को उसकी जरूरत होगी वह उपस्थित हो जाएगा।

कुछ इतिहासकारों का यह मत है कि राक्षस उन लोगों को कहा जाता है जिनके आचार-व्यवहार उन मानदंडों से भिन्न थे जिनका चित्रण ब्राह्मणीय ग्रंथों में हुआ था।

1. उद्धरण के अनुसार राक्षस किन लोगों को कहा गया? 2

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

2. उद्धरण में वर्णित व्यवहार क्या ब्राह्मणीय पद्धति के अनुरूप था? 2

3. यह सारांश कहाँ से उद्धृत है? 2

4. युधिष्ठिर किस शर्त पर भीम तथा हिडिम्बा के विवाह के लिए राजी हो गए? 2

3. विवाह के आठ प्रकार

6. यहाँ मनुस्मृति से पहली, चौथी, पाँचवीं और छठी विवाह-पद्धति का उद्धरण दिया जा रहा है:

पहली: कन्या का दान, बहुमूल्य वस्त्रों और अलंकारों से विभूषित कर उसे वेदज्ञ वर को दान दिया जाए जिसे पिता ने स्वयं आमंत्रित किया हो।

चौथी : पिता वर-वधु युगल को यह कहकर सम्बोधित करता है

कि :''तुम साथ मिलकर अपने दायित्वों का पालन करो।'' तत्पश्चात् वह वर का सम्मान कर उसे कन्या का दान करता है।

पाँचवी : वर को वधू की प्राप्ति तब होती है जब वह अपनी क्षमता व इच्छानुसार उसके बांधवों को और स्वयं वधू को यथेष्ठ धन प्रदान करता है।

छठी : स्त्री और पुरुष के बीच अपनी इच्छा से संयोग.... जिसकी उत्पत्ति काम से है।

1. मनुस्मृति का महत्व स्पष्ट कीजिए। इसका संकलन कब किया गया? 2

2. उपरोक्त विवाह पद्धतियों में से किस विवाह पद्धति को उत्तम माना गया है? और क्यों? 2

3. धर्मशास्त्रों ने कितने और कौन से प्रकार की विवाह पद्धतियों की अपनी स्वीकृति दी है। 2

4. विवाह के चार प्रकार बताइए। 2

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

विषय चार

विचारक, विश्वास और इमारतें (सांस्कृतिक विकास)

(लगभग 600 ईसा पूर्व से संवत् 600 ईसा तक)

स्मरणीय बिन्दु-

1. महान दार्शनिकों के विचार मौखिक लिखित परंपराओं में संग्रहित हुए तथा स्थापत्य और मूर्तिकला के माध्यम से अभिव्यक्त हुए।
2. वैदिक धर्म, जैनमत, वैष्णव सम्प्रदाय, शैवमत और बौद्धधर्म प्राचीन भारत के प्रमुख धर्म।
3. बौद्ध धर्म के विश्वासों और विचारों को जानने का प्रमुख स्रोत है साँची का स्तूप।
5. आरम्भ में स्तूप वस्तुतः टीले होते थे। यह पवित्र बौद्ध स्थल है यहां आंगन के बीच चबूतरों पर बुद्ध से जुड़े अवशेषों को गाड़ा जाता था।
6. सांची के स्तूप, समूह के संरक्षण में भोपाल की शासक शाहजहाँ बेगम और सुलतान जहाँ बेगम का बहुत योगदान था।
7. ईसा पूर्व प्रथम सहस्राब्दी में जीवन के रहस्यों को समझाने के लिए जरथुरत्र, खुंगत्सी, सुकरात, प्लेटो, अरस्तु, महावीर, बुद्ध आदि चिंतकों का उदय हुआ।
8. पूर्व वैदिक परम्परा में ऋग्वेद में अग्नि, इन्द्र आदि कई देवताओं की स्तुति है तथा यज्ञों का विशेष महत्व।
9. बुद्ध की शिक्षाओं का संकलन त्रिपिटक में है।
10. बौद्ध धर्म भारत से बाहर चीन, कोरिया, जापान, श्रीलंका, म्याँमार, थाईलैंड व इंडोनेशिया में फैला।
11. बौद्ध दर्शन के अनुसार विश्व अनित्य है तथा निरंतर बदल रहा है।
12. स्तूप का ऊपरी ढांचा जो प्रायः एक छज्जे जैसा होता है उसे हर्मिका कहते हैं।
13. स्तूप की हर्मिका के ऊपर जो मस्तूल बनाया जाता था उसे यष्टि कहते कहते थे।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

14. साँची और भरहुत के प्रारंभिक स्तूप बिना अलंकरण के हैं। उनमें केवल पत्थर की वेदिकाएँ तथा तोरणद्वार हैं।

15. जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर ने अवधारणा प्रस्तुत की कि सम्पूर्ण विश्व प्राणवान है। उन्होंने अहिंसा के सिद्धांत का प्रतिपादन किया व अंतिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति बताया।

16. जैन धर्म के पांच प्रमुख व्रत हैं- सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह व ब्रह्मचर्य।

अति लघु प्रश्न (2 अंक वाले प्रश्न)

1. बोधिसत्त की अवधारणा क्या थी?
2. 'नियतिवादी' तथा 'भौतिकवादी' परम्परा में दो मुख्य अन्तर बताइये।
3. ईसा पूर्व प्रथम सहत्राब्दि का काल विश्व इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ क्यों माना जाता है? स्पष्ट कीजिए।
4. ''चैत्य'' से क्या अभिप्राय है?
5. जैन दर्शन की कोई दो विशेषताएँ बताइए।
6. शालभंजिका का अर्थ और महत्व बताइये।

लघु प्रश्न (5 अंक वाले प्रश्न)

1. ''बुद्ध के जीवन काल में तथा उनकी मृत्यु के पश्चात भी बौद्ध धर्म तेजी से फैला'' उक्त कथन की पुष्टि कीजिए।
2. जैन धर्म के संस्थापक कौन थे? इस धर्म की मुख्य शिक्षाओं का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
3. साँची का स्तूप तो नष्ट होने से बच गया जबकि अमरावती का स्तूप नहीं, क्यों? किन्हीं पांच कारणों द्वारा स्पष्ट कीजिए।
4. हीनयान और महायान के मध्य अन्तर स्पष्ट कीजिए। इनके उत्थान के मुख्य कारण क्या थे?
5. बुद्ध संघ की स्थापना किसने की? बौद्ध भिक्षुओं के जीवन की मुख्य बातों का वर्णन कीजिए।
6. जिस समय सांची में स्तूप बनाया गया उसी समय बनाए गए मन्दिरों की किन्हीं पांच विशेषताओं का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
7. साँची के स्तूप के संरक्षण में भोपाल की बेगमों की भूमिका बताइए।
8. स्तूप की सरंचना का वर्णन कीजिए।
9. सांची में उत्कीर्णित मूर्तियों को लोक परंम्पराओं के संदर्भ में समझाने का प्रयास कीजिए।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

अनुच्छेद पर आधारित प्रश्न (8 अंक)

1. निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

व्यवहार में बौद्ध धर्म

सुत्त पिटक से लिए गए इस उद्धरण में बुद्ध सिगल नाम के एक अमीर गृहपति को सलाह दे रहे हैं:

मालिक को अपने नौकरी और कर्मचारियों की पाँच तरह से देखभाल करनी चाहिए.... उनकी क्षमता के अनुसार उन्हें काम देकर, उन्हें भोजन और मजदूरी देकर, बीमार पड़ने पर उनकी परिचर्या करके, उनके साथ सुस्वादु भोजन बाँटकर और समय-समय पर उन्हें छुट्टी देकर...

कुल के लोगों को पाँच तरह से श्रमणों (जिन्होंने सांसारिक जीवन को त्याग दिया है) और ब्राह्मणों की देखभाल करनी चाहिए... कर्म, वचन और मन से अनुराग द्वारा उनके स्वागत में हमेशा घर खुले रखकर और उनकी दिन-प्रतिदिन की जरूरतों की पूर्ति करके।

सिगल को माता-पिता, शिक्षक और पत्नि के साथ व्यवहार के लिए भी ऐसे ही उपदेश दिए गए हैं।

1. बुद्ध की शिक्षाओं को किस ग्रंथ में संकलित किया गया? उल्लेख कीजिए। 2
2. बुद्ध के अनुसार मालिक को अपने कर्मचारियों की किन पाँच तरीकों से देखभाल करनी चाहिए। 3
3. बुद्ध ने कुल के लोगों को श्रमणों की देखभाल के लिए क्या निर्देश दिए? 3

2. अग्नि की प्रार्थना

यहाँ पर ऋग्वेद से लिए गए दो छंद हैं जिनमें अग्निदेव का आह्वान किया गया है:

हे शक्तिशाली देव, आप हमारी आहुति देवताओं तक ले जाएँ। हे बुद्धिमंत, आप तो सबके दाता हैं। हे पुरोहित, हमें खूब सारे खाद्य पदार्थ दें।

हे अग्नि यज्ञ के द्वारा हमारे लिए प्रचुर धन ला दें। हे अग्नि, जो आपकी प्रार्थना करता है उसके लिए आप सदा के लिए पुष्टिवर्धक अद्भुत गाय ला दें। हमें एक पुत्र मिले जो हमारे वंश को आगे बढ़ाए....

इस तरह के छंद एक खास तरह की संस्कृत में रचे गए थे जिसे वैदिक संस्कृत कहा जाता था। ये स्रोत पुरोहित परिवारों के लोगों को मौखिक रूप में सिखाए जाते थे।

1. उपर्युक्त छंद किस वेद से लिए गए हैं? इनमें किस देव का आह्वान किया गया है? 2
2. वेद कितने हैं? उनके नामों का उल्लेख कीजिए। 2
3. यज्ञों की प्रासंगिकता के विषय में लिखिए। 2

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

4. स्तूप की संरचना के विषय में लिखिए। 1

3. स्तूप क्यों बनाए जाते थे

यह उद्धरण महापरिनिब्बान सुत्त से लिया गया है जो सुत्त पिटक का हिस्सा है :

परिनिर्वाण से पूर्व आनंद ने पूछा:

भगवान हम तथागत (बद्ध का दूसरा नाम) के अवशेषों का क्या करेंगे?

बुद्ध ने कहा, ''तथागत के अवशेषों को विशेष आदर देकर खुद को मत रोको। धर्मोत्साही बनो, अपनी भलाई के लिए प्रयास करो।''

लेकिन विशेष आग्रह करने पर बुद्ध बोले:

''उन्हें तथागत के लिए चार महापंथों के चौक पर थूप (स्तूप का पालि रूप) बनाना चाहिए। जो भी वहाँ धूप या माला चढ़ाएगा.... यह वहाँ सिर नवाएगा, या वहाँ पर हृदय में शांति लाएगा, उन सबके लिए वह चिरकाल तक और आनंद का कारण बनेगा।''

1. उपरोक्त उद्धरण कहाँ से लिया गया है? 1
2. परिनिर्वाण से पूर्व आनंद ने भगवान से क्या पूछा? 2
3. महात्मा बुद्ध ने आनन्द को प्रथम उत्तर में क्या कहा था? 2
4. स्तूप की संरचना के विषय में लिखिए। 3

4. भिक्षुओं और भिक्खुनियों के लिए नियम

ये नियम विनय पिटक में मिलते हैं:

जब कोई भिक्खु एक नया कंबल या गलीचा बनाएगा तो उसे इसका प्रयोग कम से कम छः वर्षों तक करना पड़ेगा। यदि छः वर्ष से कम अवधि में वह बिना भिक्खुओं की अनुमति के एक नया कंबल या गलीचा बनवाता है तो चाहे उसने अपने पुराने कंबल/गलीचा को छोड़ दिया हो या नहीं- नया कंबल या गलीचा उससे ले लिया जाएगा और इसके लिए अपराध स्वीकार करना होगा।

यदि कोई भिक्खु किसी गृहस्थ के घर जाता है और उसे टिकिया या पके अनाज का भोजन दिया जाता है तो उसे इच्छा हो तो वह दो से तीन कटोरा भर ही स्वीकार कर सकता है। यदि वह इससे ज्यादा स्वीकारता करता है तो उसे अपना 'अपराध' स्वीकार करना होगा। दो या तीन कटोरे पकवान स्वीकार करने के बाद उसे इन्हें अन्य भिक्खुओं के साथ बाँटना होगा यही सम्यक आचरण है।

यदि कोई भिक्खु जो संघ की किसी विहार में ठहरा हुआ हे, प्रस्थान के पहले अपने द्वारा बिछाए गए या बिछवाए गए बिस्तरे को न ही समेटता ने, न ही समेटवाता है, या यदि बिना विदाई लिए चला जाता है तो उसे अपराध स्वीकार करना होगा।

1. उपर्युक्त नियमों का वर्णन किस ग्रंथ में किया गया है? बुद्ध के उस शिषय का नाम बताइए जिसके प्रयासों से महिलाओं को संघ में आने की अनुमति मिली। 2
2. बौद्ध भिक्खु के लिए किन नियमों का वर्णन है? 2
3. क्या आप बता सकते हैं कि यह नियम क्यों बनाए गए थे? 2
4. विहार में ठहरते पर भिक्खु के लिए किन किन नियमों का उल्लेख किया गया है? 2

Downloaded from www.studiestoday.com